प्रेम एक गहरी आस्था है...

कोई भी माँ अपने बच्चे को देखकर कितना आनंद अनुभव करती है, वह अतुलनीय है। मनुष्य के साथ यह प्रक्रिया थोड़ी अजीब है, प्रेम में वह सिर्फ दूसरे को ही नहीं रच रहा होता, अपने को भी रच रहा होता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो आप ही मिट्टी हैं और आप ही कुम्हार हैं। अब अपना घड़ा आपको स्वयं बनाना है। तभी आप अपनी प्यास भी स्वयं बुझा सकते हैं। आपको सिर्फ घड़े का निर्माण करना है, बारिश का नहीं, वह तो होनी ही है।

अगर कोई यह कहता है कि प्रेम एक-दूसरे के साथ सम्बंध का नाम है, तो वह गलत है। अपने वास्तविक रूप में यह एक दृष्टिकोण है जो आपको और दुनिया के सम्बंधों को अभिव्यक्त करता है। किसी दूसरे के साथ प्रेम सिर्फ अहम का विस्तार होता है, जिसमें आप मांगते हैं और निराश होते हैं। प्रेम कोई दी जाने वाली वस्तु नहीं है, इसलिए इसका अंत केवल हताशा और निराशा होता है।

प्रेम एक नहीं सब है

प्रेम कभी भी `एक' नहीं होता, हमेशा `सब' होता है। जब भी वह एक होने की कोशिश करता है तो कई भ्रामक तथ्यों को जन्म दे देता है। व्यक्ति जब तक अपने प्रेमी के माध्यम से पूरी मनुष्य जाति को और पूरी सृष्टि को प्रेम करने की क्षमता नहीं रखता तब तक जानिए कि उसका प्रेम अपूर्ण है। वह दूसरों के पास इसलिए जाता है कि खुद को भरा जा सके। आपको हमेशा यह याद रखना है कि दूसरे आपके पास तभी आते हैं जब आप उन्हें कुछ दे रहे होते हैं। उदाहरण के लिए एक कटोरी में दाने को देखकर चिड़ियाएं भी आपके पास चुगने आ जाती हैं। अगर देखा जाए तो सभी की कटोरियाँ बहुत पहले से ही भरी हुई हैं। प्रकृति ने सबको प्रेम अथाह दिया है, लेकिन न देख पाने की हमारी स्थिति ही हमें दूसरों से मांगने पर मजबूर करती है। आप पहले से ही भरपूर हैं।

प्रेम अपने वास्तविक रूप में एक दृष्टिकोण है जो आपको और दुनिया के सम्बंधों को अभिव्यक्त करता है। किसी दूसरे के साथ प्रेम सिर्फ अहम का विस्तार होता है, जिसमें आप मांगते हैं और निराश होते हैं। प्रेम कोई दी जाने वाली वस्तु नहीं है, इसलिए इसका अंत केवल हताशा और निराशा होता है।

ब्र.कु.अनुज,दिल्ली

प्रेम की मांग है क्या आखिर ? जब तक तुम मेरे हो तब तक मैं तुम्हें प्रेम करता रहूंगा, तो क्या यह प्रेम हो सकता है, क्या किसी ने क्षण भर भी सोचा कि प्रेम मुक्ति है, न सिर्फ दूसरे से बल्कि स्वयं से भी। यह किसी के पीछे भागने का नाम नहीं है और ना किसी के सामने कुछ सिद्ध करने का। जब हम किसी को पूरे अपने अस्तित्व और प्राणों से प्रेम करते हैं तो सिर्फ हम करते हैं, वहां हम सम्पूर्ण रूप से विसर्जित हैं, समर्पित हैं। हमारा वहां कुछ नहीं बचता।

प्रश्न: मेरे मन में एक प्रश्न उठता है व आश्चर्य भी होता है कि आप लोग महाशिवरात्रि को शिव जयंती भी कहते हो। आप नये-नये नाम कहाँ से निकालते रहते हो। प्लीज़ वही नाम रखें जो परम्परागत चला आ रहा है।

उत्तर: नाम तो हर व्यक्ति के बदल जाते हैं। फिर शिव तो स्वयं भगवान हैं, उनके तो हज़ार नाम गाये जाते हैं। उनके नाम गुणवाचक व कर्त्तव्य वाचक हैं। वे कलियुग की महा काली रात में आते हैं इसलिए इस पर्व को महाशिवरात्रि भी कहते हैं, सचमुच तो यह इस धरा पर शिव का अवतरण अथवा दिव्य जन्म ही होता है। इसलिए इसे शिव जयंती भी कहते हैं। आपको यह जानकर आश्चर्य नहीं बल्कि अपार हर्ष होना चाहिए कि जिससे आप जन्म-जन्म से मिलना चाहते थे, वह स्वयं आपसे मिलने के लिए आ चुका है, जिसे आप ढूंढ़ते थे, वह आपकी प्यास बुझाने आ चुका है, आज से 80 वर्ष पूर्व उसका दिव्य जन्म हो चुका है।

प्रश्न: आप लोग 80वीं शिव जयंती मना रहे हो। यह 80वीं शिव जयंती ही क्यों ? शिव तो अमर हैं, उनको अंकों में बांधना उचित नहीं है। फिर आपको शिव के जन्म लेने का पता कैसे चला ? उनके जन्म लेने का पता तो सबको चलना चाहिए।

उत्तर: सन् 1936 में निराकार, ज्ञान के सागर, परमपिता परमात्मा शिव परमधाम से इस धरा पर अवतरित हुए। क्योंकि वे अशरीरी, निराकार हैं व जन्म-मरण से न्यारे हैं, इसलिए उन्हें दूसरे के शरीर में अवतरित होना होता है। वह भी तन किसी और का नहीं, बल्कि स्वयं प्रजापिता ब्रह्मा का। जब वे अवतरित हुए तो उन्होंने इस सृष्टि की महानात्माओं का संकल्प से आह्वान किया कि हे वत्सों...मैं आ गया हूँ, तुम भी मेरे पास आ जाओ और वे आत्माएं जो सतयुग आदि में महान देवी-देवता थे, आकर्षित होकर उनके पास आ गये। उन्होंने अपने परमपिता को पहचाना। शिव परमात्मा ने उन्हें सत्य ज्ञान दिया। ब्रह्मा के मुख से ज्ञान की अजस्र धारा बहने लगी। तत्पश्चात उनके द्वारा यह संदेश अन्यात्माओं ने जाना और धरा पर अवतरित अपने परमप्रिय परमात्मा को पहचाना। यह आत्मा व परमात्मा के मिलन की शुभ वेला थी। शिव तो अमर हैं, सदा ही हैं, परन्तु इस धरा पर उनका आगमन कल्प में एक ही बार होता है। इसका संदेश हम सारे विश्व को दे रहे हैं और शीघ्र ही यह दिव्य संदेश सारी धरा पर प्रचारित होता जायेगा।

प्रश्न: शिवरात्रि पर लोग जागरण करते हैं, व्रत रखते हैं, शिव पर अक के फूल भी चढ़ाते हैं, क्या सचमुच प्रत्येक शिवरात्रि पर शिव अपने भक्तों से मिलने आते हैं।

उत्तर: हाँ यह सत्य है कि प्रत्येक शिवरात्रि पर शिव अपने भक्तों से व अपने बच्चों से मिलने आते हैं। वही भक्त उनके दर्शन पाते हैं जो सच्चे दिल

से उनकी आराधना करते हैं। इसलिए किसी-किसी सच्चे भक्त को ही उनके दर्शन होते हैं। परन्तु जो अज्ञान की नींद से जाग चुके, जो भक्त से उनके बच्चे बन गये, जिन्होंने उन्हें पहचान लिया व अपने जीवन को पवित्र बना लिया उनसे मिलने वे प्रत्येक शिवरात्रि पर जागते हैं। जिन्होंने पवित्रता का व्रत सदा के लिए ले लिया, वे तो उनके अति प्रिय वत्स हैं, उनसे तो वे प्रतिदिन अमृतवेले मिलते हैं।

यहां जागरण...अर्थात् अज्ञान से जागना। सदा जागरण अर्थात् सदा स्मृति स्वरूप रहना, व्रत लेना अर्थात् दृढ़ संकल्प करना व अक के फूल चढ़ाना अर्थात शिव परमपिता पर अपनी बुराइयों को अर्पित करना है।

प्रश्न: हमने सुना है कि शिव भांग पीते व धतूरा खाते थे। उन्हें कामारि भी कहा जाता है, उन्हें सदा ध्यान मग्न भी दिखाया जाता है। जब उन्होंने काम को भष्म कर दिया था तो उनके बच्चे कैसे पैदा हुए ? फिर शिव तो सबके पिता हैं, उनके दो पुत्र ही क्यों ? क्या हम शिव के पुत्र नहीं है ?

उत्तर: आपने बड़ा ही गुह्य प्रश्न पूछा है। वास्तव में भक्ति में कई भ्रम एक गलती के कारण पैदा हुए। वो है शिव व शंकर को एक मानना। शिव तो परम ज्योति हैं, परम सत्ता हैं, निराकार हैं, अजन्मा हैं व सभी आत्माओं के परमपिता हैं, जबकि शंकर एक आकारी देवता हैं उन्हें महादेव कहते हैं अर्थात् देवताओं में महान। जबकि शिव को शिव परमात्माय नमः करते हैं। तो शिव व शंकर के चरित्रों को मिला देने से गड़बड़ हो गई। शंकर ही तपस्वी स्वरूप में हैं, वे शिव के ध्यान में मग्न हैं, उन्होंने ही तप के बल से काम को भष्म किया, उन्होंने ही पर्वत पर एकान्त में बैठकर तपस्या की। जबकि शिव परमात्मा को तपस्या की ज़रूरत नहीं, वे तो सम्पूर्ण हैं, सदा मुक्त हैं व ब्रह्मलोक में रहते हैं। शंकर तपस्या के काल में निरंतर ईश्वरीय नशे से युक्त रहे, इसलिए लोगों ने उन्हें भांग के नशे में दर्शा दिया। क्या भांग खाने वाला तपस्वी या देवता हो सकता है ? भांग देवों का आहार नहीं है। हम सब आत्माएं शिव की संतान हैं, उनकी कोई दो संतान नहीं है।

प्रश्न: शंकर का बड़ा ही विलक्षण स्वरूप दिखाया है, देह पर सर्प, राख लपेटे हुए, मस्तक पर चन्द्रमा व सिर से बहती गंगा, हाथ में डमरू व साथ में त्रिशूल। कुछ अटपटा सा लगता है। क्या शंकर ऐसे हैं ?

उत्तरः वास्तव में शंकर का कोई अलग अस्तित्व नहीं है। वे यादगार हैं, वे प्रतीक मात्र हैं उन महान तपस्वियों के जिन्होंने ज्ञानेश्वर व योगेश्वर शिव के द्वारा सिखाये गये राजयोग की साधना की। उनकी देह पर विभिन्न वस्तुओं का दिखाया जाना आध्यात्मिक मर्म लिए हुए है। ध्यान दें - जिन्होंने विकारों रूपी विषधरों को अपने गले की माला बना लिया अर्थात् विकारों को वश कर लिया, जिनका चित्त चन्द्र की तरह शीतल हो गया, जिनकी बुद्धि से निरंतर ज्ञान की गंगा बहती रही अर्थात् जो ज्ञान स्वरूप हो गये, वे ही महान तपस्वी बने। इसलिए ग्यारह रूद्रों का गायन है, वे निरंतर अशरीरी बन गये, इसलिए उन्हें नग्न दिखाते हैं, वे ज्ञान डांस करने लगे, अतीन्द्रिय सुख में झूमने लगे, तीनों काल व तीनों लोकों के ज्ञाता बन गये, इसलिए उन्हें डमरू व त्रिशूल दिया है। तो, ये ब्रह्मा-वत्सों की बाप समान स्थिति का प्रतीक है।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com